eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

आधुनिक युग के कबीर– सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

डॉ0 मंजुला श्रीवास्तव
असि0 प्रोफेसर–हिन्दी विभाग, दयानंद गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज कानपुर, उ0प्र0

Received: 29 June 2025 Accepted & Reviewed: 29 June 2025, Published: 30 June 2025

Abstract

हिन्दी साहित्य के विकास में भक्तिकाल एवं छायावाद का काल स्वर्णकाल माना गया है। हिन्दी साहित्य के विकास में भक्तिकाल से लेकर आधुनिक काल तक सभी कालों में साहित्य लेखन अपनी एक विशिष्टता लिये हुई थी। जहां रीतिकाल में कलात्मकता है तो छायावाद में सूक्ष्मता, प्रगतिवाद में सीधे–सीधे कहना एवं प्रयोगवाद में नये–नये प्रयोग करना उसकी विशेषताएं रही है। जब भक्तिकाल की चर्चा करते हैं तो इस काल को स्वर्णकाल बनाने में निर्गुण शाखा के प्रमुख कवि संत कबीर का नाम सर्वप्रमुख आता है। इसी प्रकार छायावाद के चार स्तम्भों में सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का नाम प्रमुखता के साथ लिया जाता है। संत कबीर एवं निराला के मध्य समय का व्यापक अंतराल है तथापि दोनों में पर्याप्त समानतायें हैं। दोनो अपने काल के प्रतिनिधि होकर भी एक समान हैं।

बीज शब्द :–कबीर, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, हिंदी साहित्य, भक्तिकाल, छायावाद, स्वर्णयुग, निर्गुण ब्रम्ह।

Introduction

जो व्यक्ति काल के विरूद्ध खड़ा होता है उसे चतुर्दिक से आघात सहने पड़ते हैं। सम्पूर्ण अस्तित्व को मिटा देने वाले आघातों से जब वह अक्षत शेष रह जाता है तो जनमानस इस अनुमान से उसकी ओर दौड़ पड़ता है कि उसमें कुछ असाधारण अवश्य है। उसके विषय में तरह–तरह की किवंदती बनने लगती है। निरंतर वह असाधारण होता जाता है, यहां तक कि उसे ईश्वरीय अवतार भी मान लिया जाता है। कबीर और निराला कुछ इसी तरह के व्यक्तित्व हैं, जो गौतम बुद्ध, महावीर आदि की तरह राजघराने की शक्ति सम्पन्नता तथा वैभव की पृष्ठभूमि नहीं रखते थे। कबीर तो नितान्त उपेक्षित गरीब परिवार से उठकर तत्कालीन धार्मिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था के विरूद्ध अपनी जान को जोखिम में डालकर उस व्यवस्था का विरोध करने वाले थे।

कबीर का बचपन बहुत ही गरीबी में बीतता है। उनका जन्म विधवा ब्राह्मणी से हुआ था परन्तु उनका पालन पोषण नीरू–नीमा नामक जुलाहे परिवार ने किया था। निराला जी का जन्म बंगाल के महिषादल रियासत में बसंत पंचमी के दिन हुआ था उनके पूर्वज उ.प्र. के उन्नाव जिले के गढ़ाकोला गांव के निवासी थे। जहां से उनके पिता रियासत की नौकरी के लिए आए थे। बचपन में ही उनके माता–पिता का निधन हो जाता है। निराला का बचपन एवं संत कबीर का बचपन अनेक साम्यता लिये हुए है। कबीर ने अपने लम्बे जीवन काल में बहुत कुछ देखा, बहुत कुछ जाना, बहुत कुछ सुना और बहुत कुछ गुना है। जीवन निर्वाह के लिए वे कपड़ा बुनते थे। राम की भक्ति एवं सधुक्कड़ी जीवन के कारण कार्य में बाधा आती थी उनकी मां बहुत दुखी रहती थी–

'मुसि मुसि रोवै कबीर की माई।
ये बारिक कैसे जीवहिं रघुराई।।'

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

मातृ–पितृ हीन अनाथ निराला भी अत्यंत स्वाभिमानी थे एक मामूली विवाद पर महिषादल की नौकरी छोड़कर गढ़ाकोला लौट आये। निराला का जीवन निरंतर संघर्ष शील योद्धा का जीवन था। उनकी पत्नी मनोहरा देवी की अल्पवय में मृत्यु हो जाने के कारण पुत्र–पुत्री के अलावा परिवार के अन्य सदस्यों की जिम्मेदारी भी उन पर आ पड़ी। दुर्भाग्यवश उनकी विवाहिता पुत्री भी चल बसी। जीवन भर आर्थिक संकट से जूझते सरस्वती के उपासक ने कभी हार नहीं मानी।

संत कबीर सिकंदर लोदी के समकालीन माने जाते हैं। इस काल की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण है। सिकंदर लोदी में धार्मिक असहिष्णुता थी उसने अपने विजय अभियानों में हिन्दुओं के मंदिरों और धार्मिक स्थानों को नष्ट करके अपनी घोर धर्माधंता का परिचय दिया। इस काल में सुल्तान सर्वोच्च कार्यपालक, सर्वोच्च सेनाध्यक्ष, निधि निर्माता तथा न्यायाधिकारी था। जागीरदारी प्रथा के कारण जागीरदार जनता पर जुल्म कर 'कर' की वसूली करते थे। छुआ–छूत, ऊँच–नीच समाज में फैला हुआ था। स्त्रियों की स्थिति अत्यंत खराब थी वे उपभोग की वस्तु हो गयी थी। सतीप्रथा, पर्दाप्रथा, जौहरप्रथा का प्रचलन था। धर्म के क्षेत्र में भी अनेक मत मतान्तरों, सम्प्रदायों का बोलबाला था। निराला का जन्म 1857 के गदर के बाद 1896 में होता है। गदर के उपरान्त भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन की समाप्ति होती है और इंग्लैंड की महारानी का शासन प्रारंभ हो जाता है। गदर में हजारों भारतवासियों की मौत अंग्रेजो के हाथ होती है। अंग्रेज अब और अधिक क्रूरता के साथ उनके साथ बर्ताव करते है। गरीब वर्ग, किसानों, मजदूरों पर अत्याचार बढ़ जाते हैं इंग्लैंड के राजशाही से मुक्त होने के लिए विश्व के अनेक देशों में आंदोलन प्रारंभ हो जाते हैं। पुर्नजागरण के इस दौर में निराला का जीवन आगे बढ़ता है। समाज में जाति प्रथा, छुआ–छूत, ऊँच–नीच की भावना कबीर के काल की तरह बनी हुई थी। स्त्रियां अब भी पर्दे के अंदर थी। शिक्षा का विकास हुआ था परन्तु वह भी पर्दे के अंदर था। समाज में दो वर्ग थे एक उच्च शासक वर्ग पोषित एवं दूसरा मध्य वर्ग एवं तीसरा निम्न वर्ग यह नवजागरण काल था। प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित लिखतें हैं–इन कवियों ने समाज सुधार, राजनीतिक चेतना और अर्थव्यवस्था की अपेक्षा जीवन और जगत् के उदात्त मूल्यों की खोज अपेक्षाकृत अधिक तत्परता के साथ की। वे सामयिक समस्याओं में नही उलझे बल्कि चिरन्तन मूल्यों की ओर उन्मुख रहे। उन्होंने समकालीन व्यवस्था, जाति–सम्प्रदाय और राष्ट्र तक का अतिक्रमण कर डाला तभी वे विश्वबोध से जुड़ सके।

संत कबीर मस्तमौला, अक्खड़ व्यक्तित्व के धनी थे। अपने तीखे शब्दों से सदैव हिन्दुओं, मुस्लिमों दोने पर कड़े प्रहार किये है। धर्म के आडम्बर फैलाने पर उन्होंने धर्म पंडितो, पुराहितों, काजियों, मुल्लाओं और मौलवियों को आड़े हाथ लेते हैं। नाथ–योगियों, शाक्तों को भी वे फटकारना नहीं भूलते। समाज के उच्चवर्ग पर इन पंक्तियों में व्यजना करते हैं–

'तंत न जानू मत न जानू जानू सुन्दर काया।
मीर मलिक छत्रपति राजा, ते भी खाये माया।।'

निराला जी ने तत्कालीन राजशाही व्यवस्था पर व्यंग्य के माध्यम से करारा प्रहार किया है– 'राजे ने अपनी रखवाली की : किला बनाकर रहाः बड़ी–बड़ी फौजे रखी। चापलूस कितने सामन्त आये मतलब की लकड़ी पकड़े हुए।' कवियों ने उनकी बहादुरी के गीत गाए लेखकों ने लेख लिखे ऐतिहासिकों ने इतिहासों के पन्नो भरे।'

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

धर्म के ठेकेदार पंडित, काजी, मुल्ला, योगी, तपस्वी सभी सामान्य जनता का नेतृत्व करने के बजाय अपने ही अहंकार में डूबे हुए थे उन्हें पटकाते हुए कबीर कहते हैं–

'पंडित जन माते पढ़ि पुरान, जोगी माते जोग ध्यान।
सन्यासी माते अहमेव, तपसी माते तप के भेद।।'

निराला जी ब्राह्मणों के छूआछूत, ऊँच–नीच भेदभाव के घोर विरोधी थे। वे स्वयं ब्राह्मण थे परन्तु वे इन सब चीजों से दूर रहते थे। कान्यकुब्ज ब्राहमण होने के बावजूद वे मांस भक्षण करते थे तथा ब्राह्मण धर्म के विपरीत समस्त कार्य करते थे 'राजे ने रखवाली की' कविता में वे इस पर कहते हैं–

मतलब की लकड़ी पकड़े हुए
कितने ब्राह्मण आए पोथियों में जनता को बांधे हुए।

कबीरदास जी पंडितों के लिए कहते हैं–

वेद पुरान पढ़त अस पांडे, खर चदन जैसे भारा।

साहित्य के साधक निराला एवं निर्गुण ब्रह्म के उपासक कबीर दोनों ही राम की शक्ति को मानते हैं कबीर निर्गुण राम का जप करने की बात कहते हैं। राम को चारोंवेद, स्मृति और पुराण, नवों व्याकरण उसके मर्म को नहीं जान सके। शेषनाग और गरूड़ जिसके सेवक है। जिसके चरण कमलों के विषय में कमला भी नहीं जानती। कबीर दास कहते हैं कि वे भ्रमित नहीं होते जो भगवान के भक्त है और उनकी छाया में अर्थात् आश्रम में विराजित रहते हैं।

निराला की 'राम की शक्ति पूजा असत्य और अन्याय कि विरूद्ध खड़े होकर
आस्था का स्वर गुंजाती है– 'होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोतम नवीन'।

निराला राम के सगुण रूप की उपासना करते हैं।' राम–नाम के संबंध में नंद दुलारे बाजपेयी का कथन है– 'उनके सम्मुख कोई बने बनाये आदर्श या नपे तुले प्रतिमान न थे. इसलिए जो कुछ भी उन्हे उदाहरणों में अच्छा और उपयोगी दिखायी दिया, उसी को वे नये सांचे में ढालने लगे। राम और कृष्ण उनके सर्वाधिक समीपी और परिचित नाम थे, अतएव इन्ही चरिगों को उन्होंने अपने नए सामाजिक आदशों की अनुरूपता देने की ठानी। उन्होंने यहां राम नाम को ती उद्धृत किया है, किन्तु नवीन रूप में। महाकवि निराला द्वारा रचित तुलसी दास एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण काव्य है। कवि ने इसमें अपने विचारों को नाटकीय ढंग से व्यक्त करने की चेष्टा की है। निराला रामकथा का उपयोग कई रचनाओं में करते है। गीतिका के अनेक गीत सांस्कृतिक संदर्भ से युक्त है, जहां कवि ने मां भारती से प्रार्थना की है वह उसे इतनी शक्ति प्रदान करे किवह भव सागर को आसानी से पार कर जायें।

'दें, मैं करू वरण
जननि, दुख हरण पद–राग–रजित मरण।
भीरूता के बधे पाश सब छिन्न हों,
मार्ग के रोध विश्वास से भिन्त्र हो,
आज्ञा, जननि, दिवस–निशि करू अनुसरण।''

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

इस भाव से संबद्ध निराला ने अनेक गीतों की रचना की है, जिनमें 'वर दें, वीणावादिनी वर दें', 'बन्दौ, पद सुन्दर तव' भारति जय, विजय करेंश और श्अनगिनत आ गये शरण में श्प्रात तव द्वार पर आदि कविताएं विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल के वे पहले ऐसे संत है जिन्हें पूर्ण भक्त का दर्जा प्राप्त है। श्कविता करना उनका लक्ष्य नहीं था। उनका लक्ष्य भगवत भक्ति था और उस सिलसिले में उन्होंने जो कुछ कहा या लिखा, यदि उसमें कविता है, तो जैसा कि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है, वह घलुए में मिली वस्तु है।श भक्ति के रास्ते बहुत कठिन है, जिसके बारे में कबीर कहते हैं कि–

'कबिरा यह घर प्रेम का, खाला का घर नाहि।
सीस उतारै हाथ करि, सो पैसे घर माहि।।

परमात्मा के वियोग में कबीर ने ह्रदय निकाल कर रख दिया है। प्रेम, मिलन के बाद विरह की स्थिति बहुत तड़पाने वाली है। इन पक्तियों में विरहासक्ति को भरपूर मात्रा में देखा जा सकता है–

'तलफै बिन बालम मोर जिया
दिन नहीं चौन रात नहि निंदिया तलफतलफके भोर किया।।''

कबीर निर्गुण भक्ति साधना को उसके चरम परिणति तक ले जाते है कबीर की भक्ति सहज साधना पर आधारित है। जिसमें लोक को एकाकार कर लेने की अद्भुत क्षमता है।

निराला जी गीतिका में अद्वैतवाद के दार्शनिक गीत है जहां आभासित द्वैत को अद्वैत माना गया है और सम्पूर्ण व्याप्ति में, जड़चेतन में, एक ही तत्व की प्रधानता मानी गयी है। जग का देखा एक वार इसे हम निर्गुण कहें अथवा अद्वैत–दर्शन, यह निराला जी के गीतों का प्रतिपाद्य है। वह परमात्मा या ब्रहम सर्वत्र है और कस्तूरी के मृग की सी स्थिति जीव की है। परमात्मा का वास वहां भी है, लेकिन प्राप्ति के लिए वह अन्यत्र भटकता फिरता है। पास की रे हीरे की खान', 'कहीं भी नहीं सत्य का रूप', 'अविरल जग एक अंधतम कूप' में ज्ञान मार्गी मायावाद अथवा शंकराचार्य के ब्रह्म सत्य जगमिथ्या का सा भाव आया है। लेकिन इस गीत में वेदांत का वह आत्मवाद ही केंद्र भाव है जिनमें ब्रहम की भांति आत्म भी शाश्वत और अनंत माना जाता है। यह सकल आदान–प्रदान उसी की ज्योति है और व्यक्ति में सकल सृष्टि का सार।

कबीर का ब्रह्मविचार ब्रहम सम्बन्धी भारतीय चिन्तन की एक विकसित कड़ी है। इसे कबीर के परम्परा बोध और युगबोध का सम्मिलित फल भी कह सकते है। कबीर ने आत्मा परमात्मा में कोई तात्विक भेद नहीं माना है। राम (परमात्मा) प्रत्येक प्राणी में उसकी आत्मा के रूप में स्थित है। इसका जीवन मरण नहीं होता है। यही आत्मा सारे ब्रह्मण्ड में परिव्याप्त है। माया की दीवार होने के कारण आत्मा और परमात्मा में द्वैत प्रतीत होने लगता है। रात्रि के समय स्वप्नावस्था में शुद्ध चौतन्य पारस आत्मा तथा जीवात्मा में भेद रहता है। जाग्रतवस्था में यह भेद मिट जाता है–

'कबीर सुपिने रैठि के पारस जीय के छेक।
जे सोऊं तौ दोइ जाणा, जे जागू तो एक ।।

कबीर के समय में भुखमरी थी। भूख से मुक्ति दिलाने की कोई कारगर व्यवस्था न थी। लोगों को भगवान का ही भरोसा रह गया था।

'कबीर भूखा भूखा क्या करें, कहा सुनावै लोग।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

भांडा घड़ि जिनि मुख दिया, सोई पूरण जोग।।

हिन्दू समाज में सती प्रथा पर मानवीय करूणा की भावना से सम्पृक्त कबीर उस नारी को त्याग के लिए ललकारते है–

'कबीर अब ती ऐसी है पड़ी, मन का रूचित कीन्ह, मरनै कहा डराइये, हाथि स्यधौरा लीन्ह।

अणिमा के कुछ गीतों में जैसे गहन है यह अंधकार, मरण को जिसने वरा है और दलित जन पर करो करूणा आदि कविताओं में निराला जी दलित जन के लिए भक्त की तरह भगवान से आर्तनाद करता हुआ कहता है कि हे भगवान ! तुम दलित जनों पर करूणा करो क्योंकि ये तुम्हारी शरण में आ गया है। तुम उन पर प्रीति करो ताकि वह सुख और शांति को प्राप्त कर सके। वे दीन और मलीन है, वे अक्षम है। जब तक तुम्हारी करूणा उन पर नहीं होगी तब तक वे कुछ भी नहीं कर सकते।

दलित जन पर करो करूणा छीनता पर उतर आये प्रभु तुम्हारी शक्ति करूणा।
देख वैभव न हो नत सिर पारकर जीवन निरंतर, रहे बहती भक्ति–वरूणा।

सरस्वती की वंदना करते हुए निराला यह वरदान मांगते है–

निराला का काव्य प्रोत्साहन एवं विश्वास देने वाला है। जमींदार पूंजीपति, साहूकार और मालिक वर्ग के प्रति निराला के मन में असतोष का भाव दिखाई देता है। ऐसे लोगों के प्रति व्यंग्य–बाण छोड़कर उन्होने अपनी मन की बात प्रकट की है। समाज की निष्ठुर नीति के खिलाफ विद्रोह प्रकट की है। 'तोड़ती पत्थर' आर्थिक विषमता की रचना है। 'भिक्षुक' शीर्षक कविता में उन्होंने 'भिक्षुक' के करूणजीवन पर भावपूर्ण चित्रण किया है–

पेट पीठ दोनों मिलकर है एक चल रहा लकुरिया टेक मुह पटी पुरानी झोली का फैलाता दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।

निराला जी की रचनाएं सामंतवाद, पूजीवाद और वर्तमान शासन पर करारा व्यग्य करती है। इनके व्यग्य काव्य में 'कुकुरमुता' सबसे सशक्त रचना है। इसमें नवाब के बाग में उगा कुकुरमुता पास में खिले गुलाग को बुरी तरह फटकारता है–कुकुरमुता सर्वहारा वर्ग का प्रतीक है, गुलाब पूंजीपति का–

अबे सुन बे, गुलाब, भूलमत जो पाई खुशबु, रेगोआब, खून चूसा खाद का तूने अशिदर, डाल पर इतराता है कैपिट लिस्ट

कबीर ने गरीब किसानों की दुर्दशा को बहुत समीप से देखा था उनकी आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि वे निर्धारित कर जमा करने में असमर्थ थे। लगान वसूलने वाले कर्मचारियों का व्यवहार उनके प्रति बहुत कटु था। कबीर ने एक रूपक में अपने युग की दीन दशा का कितना संवेदनात्मक चित्र अंकित किया है–

अबन न बसू इहि गाइ गुसाई। तेरे नेवगी खरे सयाने हो राम ।।
नगर एक जहां जीवधर महता, वसै जुपंच किसाना।
नैनो नकटू श्रवनू, रसनू यंद्री कहह्म न माने हो राम।।
गाई कुठाकर खेत कुरेपै, काइथ खरच न पारै।
जोरि जेवरि खेत पसारे, सबमिलि मोकी मारे हो राम।।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

खोटी महती बिकर बलाही, सिरकस दम का पारे।

बुरौ दिवानं दादि नहि लागे, इक बांध इक मारै, हो राम।।

किसान खेतों की सिचाई मुख्यतया कुएँ से करते थे। खेत में बिझुका लगा है खेतिहर की दयनीय स्थिति का बड़ा की सुन्दर चित्रण निराला जी ने किया है। जमीदार का सिपाही लग कंधे पर डाले दया करने के बजाय डांटता है। देखिये

''डेरे पर थानेदार आये हैं। डिप्टी साहब ने चंदा लगाया है एक हफ्ते के अंदर देना है। चलो बात दे आओ।''

यहाँ पर कारिंदो का विरोध करने के बजाय सहनशील गरीब किसान कुछ नहीं बोलते। लेकिन आन्तरिक चेतना उनका विरोध करना चाहती है जिसे कवि ने उसकी सांकेतिक अभिव्यक्ति इस प्रकार है–

जमींदार के सिपाही की लाठी का गूला, लोहाबंधा, दरवाजे गढ़ाकर जाता है। लोगो के सर जैसे ढाल देखती आंखो के नीचे गड़े हो।

भाषा के क्षेत्र में हम कबीर को देखें तो कबीर की शब्द योजना मात्र रमणीक ही नहीं बल्कि सूक्ष्म अर्थ व्यंजकता के कारण मार्मिक एवं उत्तेजक भी है। कबीर को यदि भाषा का लोकशिल्पी कहा जाय वो अनुचित नहीं होगा। पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीर की भाषा में अनेक बोलियो का मिश्रण मानते हैं संस्कृत के कूप जल को छुड़ाकर उन्होंने भाषा में बहुत सी बोलियों का मिश्रण है, क्योंकि भाषा उनका लक्ष्य नहीं था, और अनजान में वे भाषा की सृष्टि कर रहे थे। (हिन्दी साहित्य कि भूमिका पृ.91) (8) कबीर ग्रंथावली के संपादक डॉ. श्याम सुंदर दास श्कबीर की भाषा का निर्णय करना टेढ़ी खीर है क्योंकि वह खिचड़ी है। इन तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि कबीर ने एक नयी तरह की भाषा का प्रयोग कर काव्य शस्त्रियो को एक चुनौती दी थी।

निष्कर्ष– निराला हिन्दी के उन बिरले कवियों में से है जिन्होंने अपनी ही पहचान को बार–बार तोड़ा है। इसलिए उनके काव्य संसार में पर्याप्त विविधता दिखाई देती है। यह विविधता भाषा, शिल्प और कथ्य के स्तरपर निरतर नये प्रयोगो के चलते विकसित हुई है। उन्होने छदोबद्ध कविता की परिपाटी छोड़कर मुक्त छंद में कविताएं लिखी। मुक्तक छंद (केंचुआ छन्द) का जनक निराला जी को माना जाता है। उन्होंने अभिव्यक्ति की स्वतंत्र शैली की महत्व दिया।

हम देखें कि पारिवारिक जीवन, व्यक्तित्व, भाषा एवं शिल्प, भक्ति, अध्यात्म, गरीब शोषित सर्वहारा वर्ग कि लिए करूणा का भाव, खेतिहर मजदूरों, किसानों की दुर्दशा उन पर होने वाले अत्याचार, सामन्तों–जमीदारों के अत्याचार, जाति–पाति, ऊँच–नीच, छुआ–छूत, धार्मिक आडम्बरों पर निराला की लेखनी कबीर की तरह चली है। वे आधुनिक युग के सही अर्थों में कबीर थे। डॉ. रामविलास शर्मा कहते है निराला सन्यास एवं अद्वैतवाद के पक्षधर होते हुए भी मानवीन पीडा संन्यास, तथा दुःखो से आंख मिलाने, संघर्ष करने का बुलंद हौसला देते है। भागने नहीं, भोगने और टफराने का प्रेरणा स्पद मंत्र देते है। निराला का संपूर्ण जीवन यात्रा संघर्षपूर्ण रही। उनके साहित्य उनके संघर्षो का निचोद है।

सदर्भ सूची–

1. शर्मा, रामकिशोर, कबीर ग्रंथावली, इलाहाबाद लोकभारती प्रकाशन ग्यारहवां संस्करण 2016,पृ.05
2. प्रो. दीक्षित सूर्यप्रसाद, छायावाद की सही परख पहचान, पृ.स.– 130

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

3. शर्मा रामकिशोर, कबीर ग्रंथावली, इलाहाबाद लोकभारती प्रकाशन ग्यारहवां संस्करण 2016, पृ.स.–16
4. मिश्र शिव कुमार, आधुनिक साहित्य सृजन और समीक्षा, नंद दुलारे वाजपेयी, प्रकाशन सी. वसानी, संस्करण 1978, पृ.स.–48
5. शास्त्री विष्णुकांत, कवि निराला की वेदना तथा अन्य निबंध (प्रथम संस्करण)
6. परमानंद श्रीवास्तव, निराला भारतीय साहित्य के निर्माता, 5–140
7. नवल नन्द किशोर, निराला रचनावली भाग–1, दिल्ली राजकमल प्रकाशन, 2012 पृ.स.– 153
8. नवल नन्द किशोर, निराला रचनावली भाग–2, दिल्ली राजकमल प्रकाशन, पृ.स.–50
9. मिश्र शिव कुमार भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य, इलाहाबाद लोकभारती प्रकाशन संस्करण 1.–91
10. अक्षरवार्ता पत्रिका–उज्जैन (म0प्र0) संपादक– डॉ0 मोहन बैरागी